ओमशान्ति मीडिया

महाशिवरात्रि विशेषांक...

महाशिवरात्रि विशेषांक... मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

सत्यम् शिवम् सुंदरम् का आगमन.... !!!

सीधी रेखा में सभी हमको चलना सिखाते हैं, लेकिन सबकुछ यहाँ पर वृत्ताकार है। जिसको कहते हैं कि दुनिया गोल है। मतलब सबकुछ फिर से वही हो जाता है, जहाँ से शुरु होता है। दुनिया का चक्र भी इसी आधार पर बना जिसमें किसी चीज़ की शुरुआत जैसे हुई, उसका अंत आकर पुनः उस शुरुआत के साथ जुड़ता है। जैसे आज दुनिया का समय जैसा चल रहा है, तो सभी के मन में एक दूसरा संकल्प भी चलता है कि एक समय था जब दुनिया बहुत अच्छी थी, तो देखो, विचारों से भी वृत बन रहा है। अब नया समय, नया युग हमारे विचारों से ही आने वाला है। तैयारी हो चुकी है। सभी इंतज़ार में हैं कि नया युग आया कि आया...। समय चक्र की गति तीव्रता से उस प्रभात को छूने जा रही है जिसको स्वयं परमात्मा ला रहे हैं।

समय की घड़ी टिक-टिक करते हुए हर पल आगे बढ़ती जाती है। जो पल बीता, वो फिर नहीं आता। हर समय एक जैसा भी नहीं होगा। इस जहान में सबकुछ बदल रहा है, सिवाय एक, परिवर्तन के। परिवर्तन भी एक वृत्त के रूप में है। वो पुनः घूमते हुए वापिस वहीं आता है। जैसे साप्ताहिक चक्र, वार्षिक चक्र, ऋतु चक्र, ठीक वैसे ही सृष्टि का भी एक चक्र है, जिसे चार युगों में बांट कर हमने पूरा किया है। सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग, कलियुग, फिर सतयुग... ऐसे चक्र फिरता रहता है। चार युगों के समयांतर के बाद वो चक्र पुनः पूरा होता है। कुल मिलाकर एक शब्द में अगर कहा जाए तो हर एक चीज़ अपने स्थान पर फिर से अपना एक साइकल पूरा करके आती है। समय-चक्र को काल-चक्र भी कह सकते हैं। ये सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग से पुनः सतयुग में आने का जो समय-चक्र है, अगर देखा जाए तो ये मानव-मन की अवस्था को ही रेखांकित करता है। जब मानव सतयुग में था तो उसका मन दिव्यता की ओज से भरा हुआ था। धीरे-धीरे अपनी ऊर्जा को यूज़ करते-करते उसकी मनः अवस्था दिव्यता के बदले आसुरी प्रवृत्ति की बन गई। प्रकृति के सानिध्य में आने के कारण वास्तविक स्वरूप को भूलता गया और उसकी ऊर्जा की बैटरी धीरे-धीरे डिस्चार्ज होती गई। देहभान में आकर अपनी शक्ति को क्षीण करता गया और अपने आप को शरीर समझ बैठा। कहते हैं ना, जैसा हम अपने को सोचते, वैसा बनते। कहाँ वे दिव्य-गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वसमृद्ध, वही फिर वास्तविकता से परे होने के कारण जैसे कि भिखारी की तरह हो गये। अगर हम एक दिन भी, सुबह से शाम तक अपने आप को देखें तो सुबह हमारे मन की अवस्था तरोताज़ा होती है और शाम ढ़लते-ढ़लते थकान या असहज वाली अवस्था हो जाती है। तो सुबह की अवस्था कुछ और, और शाम की अवस्था कुछ और। लेकिन मानव तो वही है ना! ठीक वैसे ही युग-चक्र में सतयुग, सतयुग के बाद त्रेता, त्रेता के बाद द्वापर आता, ऐसे में हमारी अवस्था और मनोदशा में गिरावट आती है। आज भी कहते हैं, भारत सोने की चिड़िया था, चारो ओर सुख-शांति-समृद्धि प्रचुर मात्रा में थी। इंसानों को हम श्रेष्ठ व ऊँची अवस्था में देखते थे जिन्हें हम देवता कहते हैं। समय बीतते-बीतते हम देवतायें नीचे की ओर सृष्टि चक्र में आये, उतरते चले गये और एक साधारण मनुष्य के रूप में जीवन जीने लगे। चूंकि यह चक्र बहुत धीमी गति से चलता है, तो अब मानव जैसे कि अज्ञान अंधकार की रात्रि में जी रहा है। न खुद का पता, न खुदा के बारे में कुछ पता, न सृष्टि-चक्र का ज्ञान! अब ऐसे अंधकार से छुड़ाने के लिए, इस अज्ञान-अंधकार से मुक्त करने के लिए पुनः इस सृष्टि चक्र में परमात्मा शिव का कार्य आरंभ होता है, जिसको हम शिवरात्रि व शिव अवतरण या शिव जयंती भी कहते हैं। आप थोड़ा ठंडे व शांत दिमाग से सोचेंगे और आंकलन करेंगे तो आप समझ जायेंगे कि हाँ, यही वो समय है जिसे हम शास्त्रों में सुना करते थे कि 'यदा यदा हि धर्मस्य...'। क्या आप ऐसा दृश्य नहीं देख रहे हैं जहाँ चारो ओर कलह-क्लेष, परिवार-समाज, देश-विश्व में तेरे-मेरे के झगड़े में यूं कहें कि एक मनुष्य ही दूसरे मनुष्य के खून के प्यासे हो गये हैं। आपको ऐसा नहीं लगता! विवेक तो यही कहता, ये तो हमारी आँखों के सामने सबकुछ घटित हो रहा है। दुःख, अशांति, लड़ाई-झगड़े, तनाव ने तो मानव-जीवन से चैन ही छीन लिये हैं। मानव ऐसे चक्रव्यूह में फंस गया कि उसे समझ नहीं आता कि कैसे इससे मुक्त हुआ जाये! जब ऐसी बेला आती है तब परमात्मा का इस समय-चक्र में दिव्य अवतरण होता है। जिसे हम 'शिवरात्रि' कहते हैं। वे फिर से ज्ञान-चक्षु देकर मानव-मात्र को दैवी-ऊर्जा का संचार कर सभ्य मानव बनाते हैं। और यही वो समय है जब परमात्मा आये हुए हैं और कहते हैं कि अब जागो, समय पूरा हुआ। अज्ञान-नींद को त्यागो और आप जो थे(देवी-देवता), वैसी ही अपनी मन की अवस्था बनाओ। अब नहीं तो कब नहीं। पुनः इस धरा पर दैवी सम्पदा युक्त स्वर्णिम दुनिया आने वाली है। आप उसी दुनिया में जाने के लिए तैयारी करें। जागो मानव, स्वयं को पहचानो और परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य को जानो। जानेंगे ना! और अपनी ही दुनिया में, जहाँ सुख, शांति और चैन की बंसी बज रही है, वहाँ चलने को तैयार हैं ना! परमात्मा तो आ चुके हैं, अपना दिव्य कर्त्तव्य कर रहे हैं। बस आप अपने दिव्य नेत्र खोलो और देखो, वो आपके सामने ही तो हैं! और कह रहे हैं... बच्चे, आपको पुनः खोई हुई आपकी अपनी जायदाद देने आया हूँ, जो आप गंवा बैठे हो। अब मुझे जानो और खुद को भी पहचानो। हाँ बाबा..., हम समझ रहे हैं कि आप वो ही तो हैं...हम सबके अति प्रिय 'सत्यम्, शिवम् सुंदरम्', जो आज हमें सुंदर बनाने के लिए आये हुए हैं।

शुभकामना संदेश

परमपिता परमात्मा शिव के अवतरण की यादगार महाशिवरात्रि का महान पर्व हर वर्ष सभी भक्त लोग बड़े ही स्नेह और श्रद्धा के साथ मनाते हैं। हम सभी अनुभव के आधार से यही शुभ संदेश देते हैं कि निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा शिव अपने साकार माध्यम प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो, इस अंधकारमय कलियुगी सृष्टि को पावन सृष्टि बनाने का महान कर्त्तव्य कर रहे हैं। ये सुहावना समय आत्मा और परमात्मा के मिलन का है। तो आइये, हम सभी परमात्मा शिव से मिलन मनाकर, सर्व-शक्तियां प्राप्त कर, इस शिव जयंती पर्व पर संकल्प लें कि हम अपनी शुभ व श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा इस दुःखदायी सृष्टि को परिवर्तन कर इसे सुखमय बनायेंगे। वर्तमान समय दुनिया में जो दुःख, चिंता, भय की बीमारी बढ़ रही है, इस बीमारी से मुक्ति दिलायेंगे। इन्हीं शुभ भावनाओं के साथ इस न्यारे और प्यारे अलौकिक जन्म-दिवस, शिवजयंती की कोटि-कोटि बधाई हो।

-दादी हृदयमोहिनी, मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़

SHIVRATRI VISHESHANK_Page 1 and 2 10/02/2021 5:15 PM Page 2

परमात्म-पहचान के पाँच पैरामीटर

जिस प्रकार सोनार सोने को परखने के लिए उसे पत्थर पर रगड़ता है कि सोना खरा है या नकली है। वैसे ही अगर हमें परमपिता परमात्मा की सत्य पहचान करनी हो तो उसके लिए भी तो एक पैरामीटर होना चाहिए ना! अब वो पैरामीटर क्या हो सकता है, ज़रा ये

हमारे पास ऐसे पाँच पैरामीटर हैं जिनके आधार से परमात्मा की परख की जा सकती है, उसे पहचाना जा सकता है।

'ज्योति-स्वरूप' को पूजने के लिए ही हुई ज्योतिर्लिंग की स्थापना

परमात्मा शिव का स्वरूप - 'ज्योति-स्वरूप'

पहला, जो सर्वधर्म मान्य हो। जैसे एक व्यक्ति को कोई भाई कहता है, कोई मामा कहता है, कोई चाचा और कोई पिताजी कहता है, लेकिन उसका स्वरूप तो एक ही होता है ना, हर बार उसका स्वरूप तो नहीं बदल जाता ना! उसी प्रकार भगवान को चाहे कोई ईश्वर कहता, अल्लाह कहता या ओंकार निराकार कहता हो, लेकिन उसका स्वरूप तो वही होना चाहिए ना! बदलना तो नहीं चाहिए ना! सत्य उसको कहा जाता है जिस स्वरूप को हर धर्म वाले स्वीकार करें।

दूसरा, जो सर्वोच्च हो। जिसके ऊपर कोई न हो। जो सर्व का माता-पिता, बंधु-सखा, गुरू-शिक्षक व रक्षक हो, उसका कोई माता-पिता न हो, उसका कोई गुरू न हो, उसका कोई शिक्षक न हो और उसकी कोई रक्षा करने वाला न हो, उसको कहेंगे परमात्मा।

तीसरा है, जो सर्व से परे हो अर्थात् हम मनुष्यात्माओं की तरह जन्म-मरण के चक्र में न आते हों। परमात्मा को अजन्मा कहा जाता है। अजन्मा के साथ-साथ उसने गीता में यह भी कहा है कि मैं कालों का भी काल अर्थात् महाकाल हूँ। मुझे काल कभी खा नहीं सकता। जिसका जन्म होता है उसे कर्म भी करना पड़ता है और उसको कर्म का फल भी भोगना पड़ता है। जो कर्म और कर्मफल के चक्र में आ जाता है उसे हम परमात्मा नहीं कह सकते, क्योंकि उसने स्वयं कहा है कि मैं अकर्ता हूँ तथा अभोक्ता हूँ और न करता हूँ, न भोगता हूँ।

चौथा, जो परे होते हुए भी सब कुछ जानता हो अर्थात् सर्वज्ञ हो। इसी कारण से परमात्मा को 'त्रिकालदर्शी' कहा जाता है। जिसके पास तीनों कालों व तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिनेत्री हो तथा जो मनुष्यों को भी ज्ञान का दिव्यचक्षु प्रदान करने वाले हों, उसे ही हम परमात्मा कहेंगे।

पाँचवा, जो सर्व गुणों में अनंत हो। जिसकी महिमा के लिए कहा हुआ है, यदि धरती को कागज़ बना दो, सागर को स्याही बना दो, जंगल को कलम बना दो और स्वयं सरस्वती बैठकर परमात्मा की महिमा लिखे तो भी उसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती है।

उपरोक्त पाँच कसौटियों पर परखकर देखें, जो खरा उतरता हो, उसे ही भगवान मानें।

कई लोग शिवलिंग की प्रतिमा को ही परमात्मा व भगवान समझ लेते हैं। शिवलिंग, कल्याण करने के लक्षण के रूप में दर्शाया गया है। जैसे कि पुलिंग, स्त्रीलिंग। तो पुलिंग माना पुरुष के लक्षण और स्त्रीलिंग माना स्त्री के लक्षण। उसी तरह परमात्मा सर्व का कल्याण करता है, उसी लक्षण को, उसी कार्य को हमने शिवलिंग कहा, ना कि शिव की प्रतिमा को ही भगवान माना। उसका रूप तो 'ज्योति-स्वरूप' है। ज्योति-स्वरूप को पूजने के लिए ही हमने शिवलिंग की प्रतिमा बनायी।

हो रहा....मनुष्य आत्माओं का दिव्यीकरण

भारत खण्ड सबसे प्राचीन और अविनाशी खण्ड माना जाता है। कहते हैं, परमात्मा ने भारत में आकर नयी दैवी सृष्टि रची। शिव पुराण में अनेक बार ये उल्लेख आया है कि 'भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और उनके द्वारा दैवी-सतयुगी सृष्टि रची। नारायण स्वयं विवस्वान थे, सूर्यवंशी थे। हम सभी का वास्तविक धर्म तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म ही है।' इस आदि धर्म की स्थापना स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा शिव निराकार ने संगमयुग पर आकर की। हमारे पूर्वज भी देवी-देवता थे। संगमयुग अर्थात् सृष्टि चक्र में चार युग होते हैं, सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर युग और कलियुग। कलियुग के अंत और सतयुग के पुनः आरंभ की बेला को संगमयुग कहा जाता है। संगम माना मनुष्य-आत्माओं और परमात्मा का मिलन। आत्मा, परमात्मा के सानिध्य में आकर पुनः देव पद प्राप्त करती है। संगमयुग के दौरान परमात्मा शिव निराकार प्रजापिता ब्रह्मा के माध्यम से सहज राजयोग की शिक्षा देते हैं। उसे ही भारत का प्राचीन राजयोग कहते हैं। जिसका सर्वशास्त्रमई शिरोमणि श्रीमद्भगवद् गीता में भी उल्लेख मिलता है। राजयोग का मतलब ही है स्वयं को आत्मा समझना और उसी अस्तित्व को निखारना। आज हम अपने अस्तित्व को ही भूल गये, अपने को देह समझने लग गये। जब खुद को देह समझने लगे तो देहभान में आने से हमारा देवत्व लोप हुआ। ऐसे समय पर परमात्मा का इस धरा पर दिव्य अवतरण होता है और पुनः देह और देह से सम्बंधित मनुष्य आत्माओं में व्याप्त विकार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि से मुक्त कराकर विकारों पर विजय प्राप्त कराते हैं। और मानव में जब देवत्व का प्रागट्य होता है तो वो देवता कहलाता है। परमात्मा द्वारा अज्ञान-अंधकार को ज्ञान के प्रकाश के माध्यम से परिवर्तन करने के कार्य के रूप में ही हम शिवरात्रि का पावन त्योहार मनाते हैं।

परमात्म-मिलन की विधि : सहज राजयोग

अलग-अलग पद्धतियां व श्रीमद्भगवद्गीता में योग के इतने सारे प्रकार हैं जिससे मनुष्य हमेशा से ही भ्रमित सा रहा है कि क्या करें... ज्ञान-योग करें, भक्ति-योग करें कि बुद्धि-योग करें! तो परमात्मा ने इस बात को बहुत सहज रीति से हमें समझाया और ये बताया कि मैं इतना सहज हूँ, इतना निर्मानचित्त (ईगोलेस) हूँ कि मुझसे जुड़ने के लिए इतनी कठिन प्रक्रिया अपनाने की आवश्यकता नहीं है। मेरा तो स्वरूप ही ज्योतिर्बिन्दु है। और मुझे याद करने के लिए सबसे पहले अपने भी ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप को पहचानना होता है। क्योंकि आत्मा का मैं पिता हूँ, परम-आत्मा हूँ तो जिस प्रकार से आत्मा का स्वरूप है, उसी प्रकार परम-आत्मा का स्वरूप है। जिस प्रकार शरीर का पिता शरीर स्वरूप है, उसी प्रकार आत्मा का पिता ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा ही तो होगा। तो योग आत्मा और परमात्मा के मिलन का ही नाम है। जो कि बहुत सहज है, राजयुक्त है, इन्द्रियों का राजा बनाने वाला है, सारे पाप कर्मों को नष्ट करने वाला है। इसलिए राजयोग ही परमात्मा से योग लगाने का एक सही तरीका है। इसमें हमको अभ्यास करके सबसे पहले स्वयं को शरीर न समझकर आत्मा समझना होता है। तब जाकर उस परमात्मा की नैचुरल याद आती है। ये बात जितनी सहज है, उतनी सहज

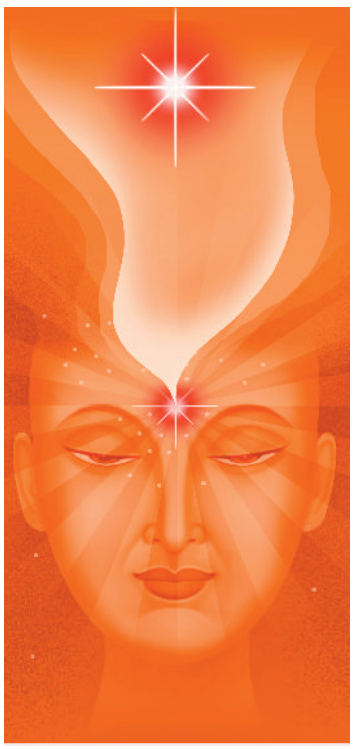

लगती नहीं है, कारण, हम बहुत दिनों से अपने आप को शरीर और शरीर से जुड़ी चीज़ों के साथ ही जोड़ते हैं। उसी से पहचाने जाते हैं। लेकिन जितना देहभान अर्थात् 'मैं-पन, मेरा-पन' है, उससे निकलने के बाद ही हमें परमात्मा मिलेंगे। तो आत्मा और परमात्मा का बुद्धि से, समझ से मिलन का नाम ही राजयोग है। और यही सर्वश्रेष्ठ विधि है परमात्मा से बात करने की।

शिवरात्रि त्योहार... परमात्म अवतरण की यादगार

शिवरात्रि की यथार्थता को समझें तो शिव माना मंगलकारी, कल्याणकारी और रात्रि माना अंधकार, अज्ञान का अंधकार। रात्रि सूचक है, जब चारो ओर अज्ञान-अंधकार में सारी मानवता का भटकाव हो जाता, उसके कारण वे दुःखी और अशांत हो जाते, ऐसे में परमात्मा का दिव्य अवतरण इस धरा पर होता और वे मनुष्यों को इस भटकाव से मुक्त कराकर सुख, शांति की राह पर ले जाते, इसी का यादगार पर्व है शिवरात्रि।

वास्तव में 'रात्रि' शब्द हर चौबीस घंटे में एक बार आने वाला अंधकारमय काल-भाग का नाम नहीं है। बल्कि यह शब्द यहाँ एक अलंकार के रूप में अथवा उपमा के तौर पर प्रयोग किया गया है। जब 'रात्रि' शब्द अलंकार के रूप में प्रयोग होता है, तो यह अन्याय, अत्याचार, लूट-खसूट, मार-धाड़, भ्रष्टाचार व पतन का वाचक होता है। सारे कल्प में जब ऐसा समय आ जाता है जबकि मनुष्य धर्मभ्रष्ट हो जाते हैं, तब संसार में हाहाकार मच जाता है। तब चूंकि सदा जागति ज्योत परमात्मा शिव इस धरा पर मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अवतरित होते हैं... इसलिए इस 'रात्रि' को लोग 'शिवरात्रि' के नाम से याद करते हैं और हर वर्ष उस सर्व महान वृत्तांत की स्मृति में त्योहार मनाते हैं। कहावत भी है कि परिस्थितियां पुरुष को जन्म देती हैं, इसलिए उक्ति के अनुसार जब संसार की परिस्थितियां अत्यंत धर्मग्लानि की होती हैं तब पुरुषोत्तम अथवा परमात्मा शिव का अवतरण होता है। इसी उक्ति के अनुरूप ही 'शिवरात्रि' नाम रखा गया है। परमात्मा का कर्त्तव्य भी परम अर्थात् सर्वमहान है। अतः उनका शुभागमन तभी होता है जब सभी तरफ अशुभ व अमंगल हो तथा नर-नारी अत्यंत पीड़ित हों। कलियुग की अंतिम बेला में अवतरण के कारण ही 'शिवरात्रि', ऐसा नाम रखा गया है। कलियुग रूपी रात्रि में ही शिव का इस पृथ्वी पर शिवलोक से आगमन अथवा अवतरण होता है। शिव के 'दुःख-हर्ता, सुख-कर्ता' अथवा 'हर-हर' आदि उपनाम भी तभी सार्थक सिद्ध होते हैं, क्योंकि कलियुग के अंत में जन-जन के दुःख हरकर सतयुग की स्थापना करते हैं। शिव युग-प्रवर्तक हैं। वह युग-पुरुष नहीं, बल्कि कल्प-पुरुष हैं। अज्ञान-निद्रा में सोये नर-नारी को ईश्वरीय ज्ञान देकर उनका कल्याण करने के लिए, उन्हें पाप से मुक्त करने तथा सुखी बनाने के लिए परमपिता परमात्मा शिव कलियुग के अंत में संगमयुग में आते हैं। मनुष्य में व्याप्त काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्ति दिलाते हैं और पुनः सतयुगी दैवी-सृष्टि की स्थापना करते हैं।

SHIVRATRI VISHESHANK_Page 1 and 2 10/02/2021 5:16 PM Page 3

क्या महापरिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा!

समय की रफ़्तार की हर घड़ी में बदलाव दिख रहा, नर सोचता कुछ और... और होता कुछ और। ऐसा महापरिवर्तन... जहाँ सबकुछ बदल रहा है, सिवाय मानव-मन के। अब समय की मांग है कि हम समय की मांग को पूरा करें। महीनता से मनन करके मन का परिवर्तन करें।

आज की स्थिति किसी से छुपी नहीं है..., 2020 ऐसा गुज़रा कि सभी ने परिवर्तन किया चाहे प्रत्यक्ष रूप से चाहे अप्रत्यक्ष रूप से, लेकिन उसको स्वीकार किया। हम देखें तो आज मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, हर क्षेत्र में परिवर्तन हुआ और हम कमज़ोर भी हुए। हम अभी भी अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं कर पा रहे हैं। सभी अपनी सुरक्षा के लिए अलग-अलग इंतज़ाम कर रहे हैं लेकिन डरे हुए भी हैं। तो ऐसे में सारी इन्श्योरेंस कंपनियां चाहे कितना भी ज़ोर लगा रही हैं, लेकिन फिर भी सबलोग असहाय हैं, जी नहीं पा रहे हैं। सबके प्रश्न हैं आगे क्या होगा, भविष्य कैसा होगा, जीवन कैसे चलेगा! ये वही महाविनाश की स्थिति है ना! यही तो बदलाव का दौर है ना! ऐसे में स्वयं को पहचानने की ज़रूरत है। जब हम अपने आप को बदलते हैं, तो उससे एक बहुत सुंदर श्रृंखला शुरु होती है जो हमारे परिवार को बदलती है, जब हमारा परिवार बदलता है तो उससे पूरा समाज बदलता है, समाज से राष्ट्र और राष्ट्र से पूरा विश्व बदल जाता है। ये बातें समय के अनुरूप हैं। बदलाव की इस श्रृंखला में हम सभी को भी ये ध्यान देने की आवश्यकता है कि जब तक हम खुद आध्यात्मिक रूप से सशक्त नहीं हो जाते, तब तक पूरी तरह से सुरक्षित महसूस नहीं कर सकते। आज इंतज़ाम है लेकिन असुरक्षित हैं। ये क्या है, बुद्धि की जागृति है या महाविनाश ही है! इसी को तो कहा जा रहा है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि में पूरा ब्रह्माण्ड जल रहा है। इसी को नटराज की मूर्ति में दिखा दिया कि वो बीच में खड़े हैं और चारो ओर अग्नि धधक रही है। बचेगा कौन? जो परमपिता परमात्मा निराकार को समझेगा, उसके साथ जुड़ेगा, स्वयं को बदलेगा और उन्हें अपने दिल में बसायेगा, वही बचेगा, वही बसेगा। मेरे प्रिय भाइयों एवं बहनों, समय को पहचानिये... आप जागिये, और औरों को भी इस जागृति से आगे बढ़ाइये। और इस नज़ारे को नज़रअंदाज़ न करिये। क्या अब भी आपको नहीं लगता कि ये वही महापरिवर्तन या महाविनाश के दौर से हम गुज़र रहे हैं!

सुखमय भारत का आगमन...!!!

कहते हैं, भारत सोने की चिड़िया था। ऐसा भारत था, ये तो हम मानते हैं, पर कब था, किसने ऐसा भारत बनाया, ये गुत्थी बनकर ही रह गई। पर आपको हम ये खुशखबरी सुनाना चाहते हैं कि ऐसा सुंदर भारत पुनः इस धरा पर स्थापित होने वाला है और उस सुंदर स्वर्णिम भारत का पहला प्रिन्स, परमात्मा की प्रथम और सर्वश्रेष्ठ रचना, हम सबका प्यारा, मनभावन, मनमोहन, सुख-चैन की बांसुरी बजाते हुए फिर से हम सभी के सामने होगा! पहले हम कल्पना मात्र करते थे, लेकिन कल्पनाओं में भी श्रीकृष्ण की यही छवि हम सभी के मानस पटल पर आ जाती थी ना! लेकिन अब तो ये छवि वास्तविकता में बदलने वाली है। जहाँ कोई तकलीफ नहीं, तनाव नहीं, दुःख-अशांति का नाम नहीं, बस चैन ही चैन और सुकून ही सुकून। हम चाहते भी हैं कि ऐसी दुनिया फिर से हो जहाँ सबकुछ सम्पन्नता और प्रचुरता से भरपूर हो। हम चाहते हैं, लेकिन वो कैसे आयेगा, कब आयेगा, ये जानना होगा। ऐसी सुंदर रचना कब रची गई और किसने रची, ये बात हमें जाननी होगी। समय चक्र के अंदर इस सृष्टि में पुनः उनका आगमन होने वाला है। लेकिन उन्हें इस धरा पर लाने वाले और ऐसा बनाने वाले सत्यम् शिवम् सुंदरम्, वो विराट कलाकार, वो अद्भुत रचनाकार, परमात्मा निराकार अभी इस धरा पर आये हुए हैं और सच्चा गीता ज्ञान देकर अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना श्रीकृष्ण और हम सभी को उन जैसा बनाने का कार्य कर रहे हैं। वे हमारी आंतरिक शक्तियों को पुनः जागृत कर, हमें सर्वगुण सम्पन्न बनाकर श्रीकृष्ण के समान ही आकर्षक बना रहे हैं। और इन सभी आकर्षक मूर्तियों, मनुष्य आत्माओं के लिए नई स्वर्णिम, सुखमयी, सतयुगी सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं। तो ऐसे संसार में आप भी चलना चाहेंगे ना! श्रीकृष्ण के साथ रास करना चाहेंगे ना! तो बस, उस परमपिता परमात्मा के साथ अपना नाता जोड़ें और उनके निर्देशन में अपने जीवन को ढ़ालें तो आप भी उनकी श्रेष्ठ रचना बनकर ऐसी दुनिया में जाने के अधिकारी बन जायेंगे।

सत्य जहाँ... सुख-शांति-समृद्धि वहाँ

"कहते हैं, 'सच तो बिठो नच'। मतलब जो सच्चा है वो हमेशा खुशी में नाचता रहेगा। तो स्वयं में झांककर देखें कि सत्य हमारे जीवन के साथ कितना जुड़ा हुआ है। अगर सत्य है, तो हर दर्द, तकलीफें, उलझनें आपसे कोसो दूर रहेंगे। फिर किसी बात की शिकायत नहीं होगी आपको।"

परमात्मा को हम सत्यम् शिवम् सुंदरम् कहते हैं। सत्यम् का अर्थ ये मानते कि जो हमेशा है, सर्वदा है, सदा है। इसलिए उसे सदा शिव भी कहते हैं। अब एक बात हम सबके अंदर उठती है कि परमात्मा शिव, जो सदा है, सत्य भी है और हम सब का ध्यान भी हमेशा उधर ही जाता है, तो आजकल के मनुष्यों की जो मनोस्थिति है, उनके दुःख हैं, दर्द हैं, तकलीफे हैं, परेशानियाँ हैं, तो उसका कारण क्या है? कारण है, व्यक्ति अंदर से भी सत्य नहीं और बाहर से भी सत्य नहीं है। क्योंकि जो सत्य है, वही सुखी है, वही शांत है, वही पवित्र है। सभी इस बात का दावा कर रहे हैं कि हम तो सत्य बोलते हैं, हमेशा सत्य ही सोचते हैं, अगर आप सच बोलते हैं, सत्य सोचते हैं, तो आप परेशान क्यों हैं? अशांत क्यों हैं? इसका सीधा सा अर्थ है कि हम सत्य शब्दों से हो सकते हैं, बातों से हो सकते हैं, लेकिन हमारा खुद का भाव, अंदर का व्यक्तित्व, अंदर की मंसा सबकुछ सत्य नहीं भी हो सकती है। इस ज्ञान में सिर्फ और सिर्फ एक ही चीज़ का सार है, वो है सत्य। इसलिए कहा जाता है कि 'सच तो बिठो नच'। मतलब जो सच्चा है वो हमेशा खुशी में नाचता रहेगा। और आत्मा को भी सच्चिदानंद स्वरूप कहते हैं। आत्मा सत्य है, आनंद स्वरूप है। उसकी बुद्धि में स्पष्टता(क्लियिरिटी) है, और जिसकी बुद्धि मलिन है, अस्थिर है, अशांत है, वो सत्य हो ही नहीं सकता। इस ज्ञान में ज़रूरत है सरल और सत्य होने की। परमात्मा उसको एकदम उठा देता है।

थोड़ा समझकर देखें, तो तुरंत सामने आता है कि दुनिया में सत्य कहीं है ही नहीं और कहते भी हैं झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार...। ऐसी झूठी माया वाले कहाँ आपको सत्य सुनायेंगे! और आज अधिक से अधिक दुनिया के प्रभावशाली व्यक्तित्व जो बाते कह रहे हैं उनको भगवान से ऊपर रखकर हम सुनने और समझने की कोशिश करते हैं! सबलोग अपने तर्क के आधार से ये बातें कह रहे हैं, लेकिन सत्य तो सत्य ही है। क्योंकि जो बातें हम सुनते हैं, उन बातों से हमारा कोई लिंक नहीं होता तो इसका अर्थ ये हुआ कि वो बातें सिर्फ और सिर्फ थोड़ी देर के लिए हैं, असत्य हैं, झूठी हैं, इस दुनिया के हिसाब से हैं। तो सत्य की तलाश हमारा अल्टीमेट लक्ष्य है और जहाँ सत्य है वहां ही सुख है, शांति है, प्रेम है, आनंद है, वहीं सबकुछ है। सत्य एक शिव है। सत्य एक आत्मा है। सत्य एक प्रकृति है। तो सत्य को पहचानो, समय को जानो तो भवसागर से तर जाएंगे। इसीलिए हम उन्हें सत्यम् शिवम् सुंदरम् कहते हैं। क्योंकि वो अपरिवर्तनशील है, अविनाशी है, अकाट्य है और अखंड है।

परमात्मा का दिव्य अवतरण... न कि जन्म

हाँ, वे ब्रह्मा के ललाट से प्रगट हुए

शिव पुराण में भी लिखा है कि भगवान शिव ने कहा - "मैं ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हाऊंगा।" आगे लिखा है कि - "इस कथन के अनुसार समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्मा जी के ललाट से प्रगट हुए और उनका नाम 'रूद्र' हुआ।"

शिव पुराण में यह भी लिखा है कि "जब ब्रह्मा जी द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ और इस कारण वह निरुत्साहित थे, तब शिव ने ब्रह्मा जी की काया में प्रवेश किया, ब्रह्मा जी को पुनर्जीवित किया और उनके मुख द्वारा सृष्टि रची।" शिव पुराण में अनेक बार यह उल्लेख आया है कि भगवान शिव ने पहले प्रजापिता ब्रह्मा को रचा और फिर उन द्वारा सतयुगी सृष्टि को रचा। इस पौराणिक उल्लेख का भी यह भाव है कि परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मस्तिष्क (ललाट) में अवतरित हुए और उनके मुख द्वारा ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा देकर उन्होंने संसार का कल्याण किया। महाभारत में लिखा है कि भगवान ने ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर ज्ञान दिया और सतयुग की पुनः स्थापना की। स्वयं गीता में भी लिखा है कि मैंने पहले यह ज्ञान विवस्वान को दिया था। सोचने की बात है कि सृष्टि के आदि में वह आदिम वक्ता कौन था? ब्रह्मा ही को तो 'आदिदेव' और शिव ही को 'स्वयंभू अथवा आदिनाथ' कहा गया है। ध्यान देने की बात है कि आद्य शंकराचार्य ने भी अपने भाष्य में इस श्लोक की व्याख्या करते हुए कहा है कि भगवान ने नई सृष्टि रचने के समय(सर्ग) ही यह ज्ञान दिया था तथा योग सिखाया था। स्पष्ट है कि तब ज्योतिस्वरूप परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ही यह ज्ञान दिया होगा। इसलिए ही भारत के प्रायः सभी प्राचीन धर्म-ग्रन्थों में ज्ञान के उद्गम के साथ ब्रह्मा और शिव ही का नाम जुड़ा हुआ है। स्वयं महाभारत में भी लिखा है

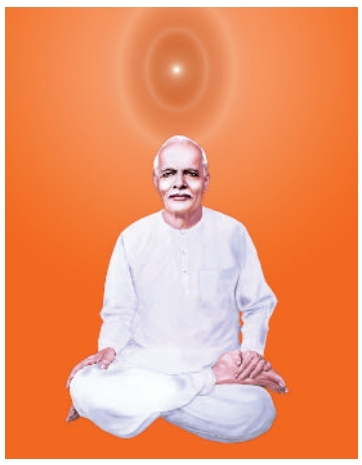

कि भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया। गीता-ज्ञान जानने वालों में ब्रह्मा ही को भागवत् आदि ग्रन्थों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। तब अवश्य ही ब्रह्मा को परमात्मा ही ने यह ज्ञान दिया होगा और उसे माध्यम बनाकर अन्य आत्माओं को भी गीता-ज्ञान सुनाया होगा।

आज सृष्टि चक्र के परिवर्तन की बेला में कलियुग के अंत समय परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा मनुष्यों को सच्चा गीता ज्ञान देकर, उन्हें श्रेष्ठ बनाकर नये स्वर्णिम सतयुग की स्थापना के लिए तैयार कर रहे हैं।

SHIVRATRI VISHESHANK_Page 1 and 2 10/02/2021 5:16 PM Page 4

ज्योति-स्वरूप निराकार ही सबके स्नेह का आधार

आज भले ही हम भिन्न-भिन्न जाति-भेद, वर्ण-भेद, धर्म-भेद, रंग-भेद में जीते हों, भले ही हरेक के आराध्य भिन्न-भिन्न हों, भले ही वे खुद को दूसरों से भिन्न समझते हों, पर हम सभी के जो भी आराध्य हैं, वे सभी साकार हैं और उन सभी के तार कहीं न कहीं निराकार ज्योतिर्बिन्दु परमात्मा से ही जुड़े हैं। तभी तो सभी ने परमात्मा के 'ज्योति-स्वरूप' को स्वीकारा और यही कहा, 'गॉड इज़ लाइट, गॉड इज़ वन, सबका मालिक एक'।

विश्व के प्रमुख धर्म-ग्रन्थों के सूक्ष्म अध्ययन से यह तथ्य स्वयमेव उजागर होता है कि सभी आत्माओं के परमपिता परमात्मा 'निराकार ज्योतिस्वरूप शिव' ही हैं। प्रायः सभी धर्मों के लोग कहते हैं कि परमात्मा एक है, वो सभी का पिता है और सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। आप देखेंगे कि भले ही हर एक धर्म के स्थापक अलग-अलग हैं परंतु हर एक धर्म के अनुयायी 'निराकार, ज्योति-स्वरूप परमात्मा शिव' की प्रतिमा (शिवलिंग) को किसी न किसी प्रकार से मान्यता देते हैं।

भारत में देखा जाता है कि सबसे प्राचीन ते प्राचीन मंदिर ज्योतिर्लिंगम परमात्मा शिव के ही दिखाये हुए हैं। जो समस्त भारत के हर कोने में स्थापित है।

भारत के हर कोने में शिव

पूर्व दिशा में जायेंगे तो सोमनाथ मिलता है अर्थात् सोमरस, अमृत देने वाला नाथ।

उत्तर में- **'अमरनाथ'** के रूप में उनकी पूजा होती है अर्थात् जो अमर आत्माओं का नाथ है। दक्षिण में - **श्रीराम ने शिव की पूजा की जिनकी आज 'रामेश्वरम' के रूप में पूजा होती है।** इसी तरह दिखाते हैं कि कुरुक्षेत्र के मैदान में महाभारत युद्ध के पहले स्वयं **श्रीकृष्ण ने भी 'थानेश्वर सर्वेश्वर' की स्थापना कर उनकी पूजा की।**

पाँचो खंडों में निराकार की यादगार

भारत के अलावा जापान में जायेंगे तो जो शिकोनिज़म् सेक्ट वाले हैं वे एक पत्थर, जिसे 'करनी का पवित्र पत्थर' कहते, उसका ध्यान लगाते हैं। जिसका नाम दिया है - **'चिंकोनशेकी'।**

जीसस ने भी कहा - 'गॉड इज़ लाइट, आई एम द सन ऑफ गॉड'। सिक्ख धर्म में भी देखें तो **गुरुनानक देव ने भी यही कहा कि 'एक ओंकार निराकर'।**

मुस्लिम धर्म में परमात्मा को 'नूर-ए-इलाही' कहा गया है। 'नूर-ए- इलाही' अर्थात् वो नूर, वो तेज, वो तेजोमय स्वरूप जिसको हमने ज्योतिर्लिंगम कहा, ज्योतिस्वरूप कहा।

पारसियों के अग्यारी में जायेंगे तो वहाँ पर **'होली फायर'** मिलता है। रोम में शिवलिंग को **'प्रियपस'** कहते थे। चीन में शिवलिंग को **'हुवेड-हिफुह'** कहा जाता था और इसी नाम से इसकी पूजा होती थी। बेबीलोन में शिवलिंग को **'शिउन'** कहा जाता था। मिस्र में **'सेवा'** और फिजी में **'सेवा'** या **'सेवाजिया'** नाम से पूजते हैं।

फ्रांस के गिरजाघरों में तथा अजायबघरों में लिंग रूप के पत्थर आज भी स्मारक रूप में देखे जाते हैं। **यूनान में शिवलिंग का नाम 'फल्लुस' प्रचलित रहा है। स्याम-थाइलैंड में भी 'एकोनिस' और 'ऐस्टरगेरीस' नाम से शिवलिंग पूजे जाते रहे हैं। यहूदियों के यहां शिवलिंग को 'बेलफेगो' कहते हैं।**

सभी की भावना.. कल्याण हो

अनेक देशों और धर्मों आदि में शिवलिंग की पूजा का उल्लेख करके यह स्पष्ट है कि एक समय था जब सभी धर्मों और देशों के लोग इसे अशरीरी अथवा निराकार परमपिता परमात्मा की प्रतिमा के रूप में मानते थे। 'शिव' का अर्थ ही होता है 'कल्याणकारी', और सभी चाहते हैं कि सर्व का कल्याण हो, सबका भला हो, तभी तो सभी ने उनको माना भी और स्वीकारा भी। इसीलिए हम देखते हैं कि भले ही परमात्मा के लिए नाम और शब्द अलग-अलग हैं, लेकिन मान्यता सभी ने एक निराकार ज्योतिस्वरूप को ही दी, जिसकी ही यादगार हर स्थान पर पाई जाती है।

परमात्मा से महापरिवर्तन का नया दौर

भारत भूमि पर बड़े सहज व शांतिमय ढंग से महापरिवर्तन का नया दौर चल चुका है। और आपको आश्चर्य लगेगा, परंतु इसका बीड़ा स्वयं परमात्मा ने उठाया है। अरावली की श्रृंखला में बसे पवित्र स्थान माउण्ट आबू में परमात्मा शिव निराकार ज्योतिर्बिन्दू अपने साकार माध्यम, पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर यह कार्य करवा रहे हैं। इस महापरिवर्तन में वे लोग शामिल हैं जिन्होंने स्वेच्छा से पवित्रता को अपनाया है। जैसे गौतम बुद्ध जी ने कहा कि इच्छाएं ही मनुष्य के दुःख का कारण हैं, तो बस, हमें इच्छाएं कम करनी हैं। उसके लिए आत्मा की खुराक को समझना है। क्योंकि आत्मा सतोगुणी है, इसकी मानवीय-इच्छाएं इन्द्रियों के असंयम के आधार से हैं। इसलिए हे आत्माओं! बस अपने को आत्मा

समझकर चलना, कार्य करना है। शक्ति के लिए बार-बार परमात्मा से जुड़ना है। यही परमात्मा हमसे कहते, और इसी के आधार से पूरे विश्व को एक नये दौर में ले जाते हैं। यह पूर्णतः स्वैच्छिक है। आप भी क्यों नहीं इस विधि को अपनाकर देखते हैं! महापरिवर्तन का यह दौर बस चंद दिनों का है। हम सभी के पिता शिव निराकार परमात्मा आपको भी यह मौका देना चाहते हैं कि आओ... आपको भी ऐसे पावन दुनिया में ले चलूं जहाँ बिना मेहनत सब कुछ मिल जायेगा। कुछ नहीं करना है वहाँ, लेकिन उसके लिए पुरुषार्थ करना है यहाँ।

वर्तमान में परमात्मा शिव की आवश्यकता... !!!

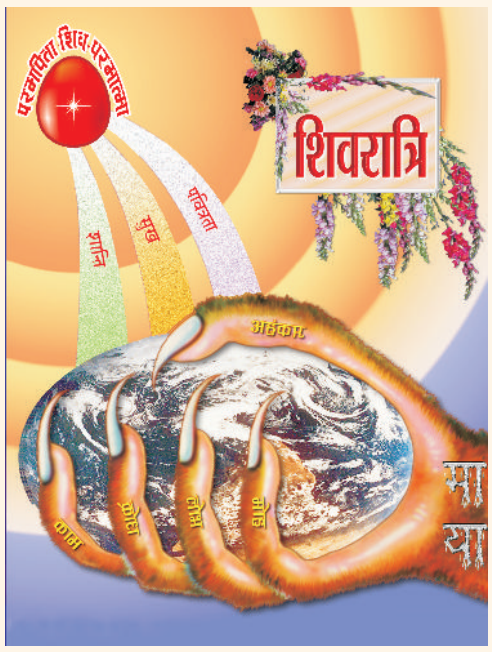

आज मानव-इतिहास पुनः एक महत्वपूर्ण मोड़ पर आ पहुंचा है जहां एक ओर मानव-उत्थान की अनंत संभावनायें हैं तो दूसरी ओर उसके समूल विनाश की पूरी तैयारी! विज्ञान और तकनीकी प्रगति दूषित मस्तिष्क वाले मानवों के हाथ का खिलौना बनी हुई है। उसने मानव-जाति को ऐसे बारूद की ढ़ेरी पर ला खड़ा किया है जिसमें किसी भी समय विस्फोट हो सकता है। प्रकृति पर विजय पाने के हर्षोल्लास में मानव इतना पागल हो गया है कि उसे स्वयं का होश न रहा है। अपने मूल स्वभाव- शांति, प्रेम, आनंद व आत्मज्ञान से उसका सम्पर्क बिल्कुल ही टूट चुका है। सर्व भौतिक साधनों के होते भी मानसिक तनाव बढ़ता जा रहा है और नींद के लिए गोलियां लेनी पड़ रही हैं। वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण व ध्वनि-प्रदूषण से मनुष्य परेशान अवश्य है परंतु वह इन प्रदूषणों को रोकने में असमर्थ है क्योंकि इन सबके पीछे जो मानव-मस्तिष्क का प्रदूषण है वह बंद नहीं हो रहा है। मानव-समस्याएं दिनोंदिन बढ़ती जा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जहाँ राष्ट्रों के बीच तनाव बना हुआ है वहां प्रत्येक राष्ट्र के अंदर भी शासक और शासित के सम्बंध ठीक नहीं हैं। अनुशासन का हर क्षेत्र में सर्वथा अभाव है। तनाव हर क्षेत्र की सामान्य बात हो गई है। इस प्रकार शिव परमात्मा के आने का यह अनुकूल समय है और वह आकर अपना कार्य कर भी रहे हैं। वे सबकी श्रेष्ठ तकदीर जगा रहे हैं। कहीं ये सुअवसर हमारे हाथ से निकल न जाए। मनुष्य की वास्तविक उन्नति, कल्याण की क्रियात्मक प्राप्ति एवं आनंद की आध्यात्मिक अनुभूति तो शिव से मन को जोड़ने ही के द्वारा होती है। ऐसे में सर्व क्षेत्र की सर्व-प्रणाली को श्रेष्ठ व सुंदर बनाने के लिए ही परमात्मा की ज़रूरत है। अतः हे मनुष्य, थोथी विद्वता की बातों को छोड़कर, अपनी उन्नति और अपने आध्यात्मिक लाभ की बात सोचें और उस भाग्यविधाता परमात्मा शिव से रिश्ता जोड़ लें।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

[स्थानीय सेवाकेन्द्र का पता]